मनुष्य को सिर्फ दो चीजों की आवश्यकता होती है। पहला, दूसरों की गलतियों को भूलना और दूसरा, अपने अन्दर अच्छाई लाना।
–अज्ञात।

विचार-प्रवाह
देहरादून, बृहस्पतिवार 23 दिसंबर 2021
पेज थ्री
www.page3news.in

हमेशा से एक चुनौती रही

अर्थशास्त्र के अकादमिक हलकों में लंबे समय से मौजूद ऐसी ही एक चुनौती से जूझने और बेहतरीन ढंग से निपटने के लिए इस साल अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार तीन अर्थशास्त्रियों को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया है।

आरती सिंह।।

इस साल इकनॉमिक्स में दिया गया नोबेल पुरस्कार जितना महत्वपूर्ण अर्थशास्त्रीय विमर्शों के लिहाज से है, उतना ही उपयोगी आम लोगों की सामान्य दिनचर्या में आसानी से पैठ बनाती मान्यताओं, यहां तक कि पूर्वाग्रहों की सत्यता खंगालने की दृष्टि से भी है। यह समझना जरूरी है कि समय के साथ जनजीवन का हिस्सा बन जाने वाली मान्यताएं या पूर्वाग्रह भी सत्य से पूरी तरह वंचित नहीं होते। अगर समाज के किसी हिस्से में यह मान्यता जड़ जमा चुकी है कि घर से निकलते समय जिंदा मछली या नीलकंठ पक्षी दिख जाए तो दिन अच्छा होता है तो बहुत संभव है कि इसके पीछे कुछ ऐसे संयोग होंगे जिनमें मछली या नीलकंठ पर नजर पड़ने के बाद कुछ लोगों के काम सधते हुए देखे गए होंगे। दिक्कत यह है कि आम लोगों के पास इस तरह के संयोगों की वैज्ञानिक पड़ताल करने या कथित कारण और उसके बताए जा रहे परिणाम के बीच अनिवार्य रिश्ते को देखने, पहचानने, समझने और उसकी वैज्ञानिक तौर पर पुष्टि या खंडन करने लायक समझ, फुरसत और क्षमता नहीं होती। मगर वैज्ञानिकों के लिए यह हमेशा से एक चुनौती रही है।

अर्थशास्त्र के अकादमिक हलकों में लंबे समय से मौजूद ऐसी ही एक चुनौती से जूझने और बेहतरीन ढंग से निपटने के लिए इस साल अर्थशास्त्र का नोबेल पुरस्कार तीन अर्थशास्त्रियों को संयुक्त रूप से प्रदान किया गया है। इन तीनों अर्थशास्त्रियों – कैलिफोर्नियां यूनिवर्सिटी, बर्कले के डेविड कार्ड, मैसाचुसेट्स इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नलॉजी के जोशुआ एंग्रिस्ट और स्टैनफोर्ड युनिवर्सिटी के गुइडो इंबेंस– ने अपने रिसर्च और प्रयोगों के जरिए महत्वपूर्ण मान्यताओं को परखने और गलत साबित करने की दिशा में बड़ा काम किया है। डेविड कार्ड ने काफी समय से लगभग स्वयंसिद्ध मान ली गई इस मान्यता को लिया जिसके मुताबिक माना जाता था कि अगर किसी क्षेत्र में न्यूनतम वेतन बढ़ाया जाता है तो उसका अनिवार्य परिणाम होता है श्रमिकों की छंटनी। उन्होंने अमेरिका के, आसपास बसे और लगभग एक जैसे हालात वाले, दो अलग राज्यों– न्यू जर्सी और पेन्सिलवेनिया– में स्थित दो शहरों को अपने अध्ययन का आधार बनाया। इनमें से एक में न्यूनतम वेतन बढ़ाया गया था और दूसरे में नहीं। इस अध्ययन ने दिखाया कि न्यूनतम वेतन बढ़ाने–घटाने का इन राज्यों में मजदूरों के रोजगार की स्थिति पर शायद ही कोई नेगेटिव असर पड़ा। इस एक अध्ययन ने ऐसे कई अध्ययनों की राह खोली। इस तरह के रिसर्चों में एक बड़ी दिक्कत इसकी मेथडॉलजी से जुड़ी होती है क्योंकि विज्ञान की अन्य शाखाओं की तरह अर्थशास्त्र में अमूमन कोई प्रयोग लैब की नियंत्रित परिस्थितियों में नहीं किया जाता। मगर जोशुआ एंग्रिस्ट और गुइडो इंबेंस ने नब्बे के दशक के दौरान किए गए अपने शोधों के जरिए मेथडॉलजी से जुड़े संदेहों का पूरी प्रामाणिकता से खंडन किया। इससे पहले भी नोबेल पुरस्कारों ने अर्थशास्त्र में शोध के तरीकों को नए सिरे से परिभाषित करने वाले प्रयासों को मान्यता दी है। यह पुरस्कार भी लंबे समय तक याद रखा जाएगा।

कंजूस

अशोक वोहरा।

उनके मन में कई सवाल उठने लगे। अंत में कंजूस को राज दरबार में पूरा हाल सुनाने के लिए राजा के सामने पेश किया गया। कंजूस ने बीती रात, सांप व बादाम के छिलकों के संघर्ष की पूरी कहानी कह सुनाई और कहा, "महाराज, मरने के बाद सबसे ज्यादा दान ही काम आता है, अतः दान करना ही सब धर्मों से श्रेष्ठ है।" बहुत समय पहले एक राजा था। वह अपनी न्यायप्रियता के कारण प्रजा में बहुत लोकप्रिय था। एक बार वह अपने दरबार में बैठा ही था कि अचानक उसके दिमाग में एक सवाल उभरा। सवाल था कि मनुष्य का मरने के बाद क्या होता होगा? इस अज्ञात सवाल के उत्तर को पाने के लिए उस राजा ने अपने दरबार में सभी मंत्रियों आदि से मशवरा किया। सभी लोग राजा की इस जिज्ञासा भरी समस्या से चिंतित हो उठे।

संपादकीय

लंबी योजना की जरूरत

यह अच्छा आइडिया था या नहीं, इस बात को रहने देते हैं, लेकिन कई किसानों, खासतौर पर उत्तर भारतीय किसानों को यह पसंद नहीं आया। वे सरकार को अनाज बेचने के आदी हैं। उनका मानना है कि सरकार के इस बाजार को नियंत्रित करने की वजह से अनाज की कीमत ऊंची रहती है, जो किसानों के हक में है। इस मामले में किसान मोटे तौर पर सही हैं। सरकार ने करोड़ों टन अनाज का भंडार तैयार किया है, इसलिए खाद्यान्न महंगे हैं। इसे आप ऐसे भी समझ सकते हैं कि भारत में ज्यादातर अनाज की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार से अधिक रहती हैं। किसानों को यह बात भाती है। यह भी सच है कि देश के पास जरूरत से अधिक अनाज है। हमारी खेती में ऐसे उत्पादों को शामिल करने की जरूरत है, जिनका निर्यात किया जा सके। यह तभी हो सकेगा, जब अनाज की कीमत से सरकार का नियंत्रण खत्म हो। उनकी कीमत बाजार तय करे। लेकिन इसके लिए अलग किसानों की जरूरत पड़ेगी। वैसे किसान जो समृद्ध हों, शिक्षित हों और उनमें उद्यमशीलता हो। यह रातोरात नहीं हो सकता। इसके लिए लंबे वक्त की सूझबूझ भरी योजना बनानी होगी, जिसके लिए सरकार तैयार नहीं है।

प्रधानमंत्री ने देशवासियों को महत्वपूर्ण संदेश देने के लिए इस दिन को चुना। इस संदेश की मूल बात यह थी कि सरकार ने 14 महीने पहले जिन तीन कृषि कानूनों को लागू किया था, पीएम ने उन्हें वापस लेने का ऐलान किया।

कृषि क्षेत्र में सरकारी पहल

अशोक देसाई।।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को सिख भाइयों को बधाई और शुभकामनाएं दीं। 1,604 ईस्वी में इसी दिन गुरु ग्रंथ साहिब को सिखों के पांचवें गुरु अर्जन देव ने अमृतसर के गुरद्वारा रामसर साहिब में रखा था। गुरु ग्रंथ साहिब में सिखों के पहले चार गुरुओं के लिखे भजन हैं। प्रधानमंत्री ने देशवासियों को महत्वपूर्ण संदेश देने के लिए इस दिन को चुना। इस संदेश की मूल बात यह थी कि सरकार ने 14 महीने पहले जिन तीन कृषि कानूनों को लागू किया था, प्रधानमंत्री ने उन्हें वापस लेने का ऐलान किया। यह बड़ी खबर बनी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि नरेंद्र मोदी शायद ही किसी चीज से पीछे हटते हैं।

प्रधानमंत्री ने जिस संबोधन में इन कानूनों को वापस लेने का ऐलान किया, वह एक लंबा संदेश था। उसी के एक छोटे हिस्से में उन्होंने इन कानूनों को वापस लेने की बात कही। कुछ ही महीनों में पांच राज्यों में चुनाव होने वाले हैं। इसलिए सरकार की उपलब्धियों के बारे में बताने का वह सही मौका था और मोदी ने इसे गंवाया नहीं। उन्होंने कहा कि सरकार ने माइक्रो–इरिगेशन, सॉयल हेल्थ कार्ड्स और नीम कोटेड यूरिया को बढ़ावा दिया है। माइक्रो–इरिगेशन ऐसी तकनीक है, जिसमें पानी की कम मात्रा सीधे पौधों की जड़ तक पहुंचती

है। भारत इसे इस्राइल से सीखने की उम्मीद कर रहा है। सॉयल हेल्थ कार्ड्स से किसानों को जो सूचना मिलती है, उसकी मदद से वे उर्वरक का बेहतर ढंग से इस्तेमाल कर सकते हैं। दूसरी तरफ, नीम कोटेड यूरिया को खेतों में धीरे–धीरे डाला जाता है तो पौधों को कहीं अधिक लाभ होता है। ये सारे ही अच्छे आइडिया हैं, लेकिन इन पर किस हद तक अमल हुआ है, इसका पता नहीं है।

सरकार ने फसल बीमा योजना के तहत किसानों को मुआवजा दिलाया है। माना जाता है कि इस योजना के तहत किसानों को 1 लाख करोड़ रुपये मिले हैं। एक साल में देश में जितनी पैदावार होती है, यह रकम उसका 40वां हिस्सा है। क्या यह रकम काफी थी? क्या फसल बीमा योजना के तहत दी जाने वाली रकम प्रभावित किसानों तक पहुंची? हो सकता है, आगे चलकर हमें इन सवालों के जवाब मिलें। प्रधानमंत्री ने यह भी याद दिलाया कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में बढ़ोतरी की गई है। असल में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से पहले इसमें अंग्रेजों, बाद में कांग्रेस सरकारों और सभी राजनीतिक दलों की सरकारों ने बढ़ोतरी की है। तो क्या मोदी इसका श्रेय नेहरू, राव और मनमोहन सिंह की सरकारों के साथ बांटना चाहेंगे?

हजारों मंडियों को ई–मंडियों में बदला गया है। यानी वहां कंप्यूटर लगे हैं, जिनकी मदद से लोग कृषि उपज की खरीद या बिक्री कर सकते हैं। जो लोग इनके जरिये अनाज की खरीद–बिक्री करते हैं, उनमें से कितने किसान हैं, कितने व्यापारी और कितने सट्टेबाज? ई–मंडियों में किन फसलों का व्यापार ज्यादा हो रहा है? फसलों की कटाई के बाद के महीनों में कितना व्यापार होता है और बाद के महीनों में कितना? अच्छा होगा, अगर ये अटपटे सवाल ना पूछे जाएं। यूं भी इनका जवाब किसी के पास नहीं है। मोदी ने यह भी कहा कि उनकी सरकार किसानों के हित में कृषि कानून लेकर आई थी। लेकिन क्या अच्छी नीयत ऐसे मामलों में काफी होती है?

अष्टयोग-5027

3		4	6	7		
	23	2	31		39	
	5	1			7	4
6	33		29	3	36	
	3		4			2
7	37		36	5	29	
	5	7	6		2	3

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5026 का हल

3	6	2	4	1	7	5
1	25	3	31	5	37	7
2	1	7	6	3	5	4
7	37	6	40	2	24	3
6	3	5	7	4	1	2
5	33	4	37	6	29	1
4	5	1	3	7	2	6

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

बिक्री का करार करने की इजाजत

मोहन। किसान सिर्फ सरकारी मंडियों में अनाज बेचने के लिए मजबूर नहीं होता। दूसरे कानून से उन्हें फसल तैयार होने से पहले ही उसकी बिक्री का करार करने की इजाजत मिलती। आमतौर पर फसल की बुवाई के वक्त ऐसे करार किए जाते हैं। तीसरे कानून में किसी उपज की स्टॉक लिमिट तय करने का सरकारी अधिकार खत्म किया गया था। यानी इन कानूनों के पीछे की सोच स्पष्ट थी। 1940 से 1960 के दशक तक देश में अनाज की कमी रही। इसलिए किसानों को सीधे सरकार को अनाज बेचने के लिए मजबूर किया गया। इनमें भी खासतौर पर गेहूं और धान पर जोर था, लेकिन इस वजह से अनाज का निजी व्यापार कम हो गया। बीजेपी सरकार इस निजी व्यापार को बढ़ावा देना चाहती थी। इसके पीछे सोच यह रही होगी कि अगर निजी व्यापार बढ़ेगा और वह एकीकृत होगा तो अनाज की कीमत बाजार के हिसाब से तय होगी। उस बाजार से जुड़े लोग भविष्य में कीमतों का अंदाजा लगाकर किसी अनाज का स्टॉक बढ़ाएंगे या कम करेंगे।